विचार बिन्दु

मानव का मानव होना ही उसकी जीत है, दानव होना हार है, और महामानव होना चमत्कार है। –डॉ. राधाकृष्णन

कोचिंग प्रतियोगात्मक परीक्षाओं के लिए गम्भीर अध्ययन साधना या क्रूर व्यवसाय

प्रातः भ्रमण में, घुमक्कड़ को दो पुराने मित्र मिल गए। एक मित्र, निजी स्तर पर फीस चार्ज कर, विद्यार्थियों को कुछ विषय पढाते थे और गाइडेंस देते थे। इसके लिए उनकी अच्छी शोहरत थी। अब वे भी एक नाम चीन कोचिंग संस्था के साथ है।

चर्चा चल पड़ी, कोटा में नीट-, कोचिंग लेने वाले छात्रों द्वारा, हर महीने होने वाली 1, 2 आत्महत्याओं पर।

घुमक्कड़ नें उनसे पूछ लिया कि आत्म हत्याओं के लिए, कहीं न कहीं, क्या कोचिंग संस्थाएं जिम्मेदार नहीं? उनकी प्रतिक्रिया थी कि कोचिंग संस्थाएं नहीं, पेरेंट्स जिम्मेदार है। माँ-बाप चाहते है उनका बेटा-बेटी इंजीनियर, डॉक्टर बने ही बने। उनके लिए नॉट छापने वाली मशीन बने। जो सपने उन्होंने अपने लिए देखे और नहीं बन सके, उनकी यह तम्मन्ना होती है कि उनका अधूरा सपना उनके बेटे-बेटियां पूरा करे। 1,2,3,4 साल बच्चों के पीछे ही पडे रहते है कि इंजिनियर/डॉक्टर तो बनना ही बनना है।

बात आगे बढ़ी, एक ओर सज्जन जुड़ गए। कहने लगे, ऐसी क्या कोचिंग कि 7/8 घण्टे की पढ़ाई संस्थान में, कम से कम 5, 7 घण्टे की पढ़ाई अकेले में होस्टल या पीजी के कमरे पर, हर रविवार को टेस्ट? बच्चों को सोचने-समझने, कुछ खेल कूद तथा मित्रों से (बमुश्किल से कोई हो तो) हल्की-फ़ुल्की बातें कर तनाव दूर करने तक का समय नहीं देते।

कुछ ओर गम्भीर व्यक्ति जुड़ गए। बात चली कि हर बार जब भी ऐसे हादसे होते है, काफी कुछ अखबारों में लिखा जाता है, टीवी डिबेट्स भी चलती है, नेताओं के तो उलूल-जुलुल वक्तव्य-सुझाव आते ही आते हैं। फिर चुप्पी। कुछ अंतराल पर फिर कोई सुसाइड मामला सामने आ जाता है। यह सिलसिला रुकता क्यों नहीं? अभी कोटा में एक ही दिन में जो दो आत्महत्याएं हुई उसके बाद भी हिंदी, अंग्रेजी अखबारों में बहुत कुछ लिखा गया। पेरेंट्स के, साथी छात्रों के विचार भी आए।

इस प्रात:कालीन अनौपचारिक संगोष्टि में भी सुझाव आने लगे---(1) जिन छात्र-छात्राओं के बोर्ड की 10वी, 12वीं परीक्षा में 60 प्रतिशत से कम अंक हों, उन्हें कोचिंग संस्थान प्रवेश न दें। इस से कम अंकों वाले छात्र-छात्राएं, ज्यादा अच्छा परफॉर्म करने वालों के साथ अनावश्यक कम्पीटिशन और तनाव से बचेंगे।

(2) कोचिंग संस्थानों को स्वयं भी, अनिवार्यत:, एंट्रेंस टेस्ट आयोजित कर ही, एक निश्चित योग्यता से ऊपर वाले विद्यार्थियों को ही एडमिशन देना चाहिए। उनके संस्थान से पिछली नीट/परीक्षाओं में 12वीं बोर्ड परीक्षा के जिस परसेंटेज पर अंतिम छत्र का चयन हुआ, वह परसेंटेज अथवा अधिक से अधिक 5 प्रतिशत कम की कटऑफ नए प्रवेश के लिए रखी जाए। इस से कम अंकों वालों को प्रवेश न दिया जाए। इस से, बहुत से बच्चे तनावयुक्त अनावश्यक अंधी प्रतियोग्यता से बचेंगे।

(3) यह भी बात सामने आती है कि जितने छात्र-छात्राएं कोचिंग लेते हैं, उन में बमुश्किल 5 से 10 प्रतिशत का नीट--- में सफल होते है तो फिर लाखों-लाख की संख्या में कोचीग में प्रवेश क्यों?

सर्वाधिक महत्व की तो यही बात है कि पेरेंट्स गाइड बनें किन्तु बच्चों पर अनावश्यक तनाव न डालें। बच्चे का क्या पोटेंशियल है, यह सबसे ज्यादा पेरेंट्स जानते है। पड़ोसीयों, रिश्तेदारों, जान-पहचान वालों के बच्चों की अपने बच्चों के साथ बात-बात में तुलना कर उन में हीन भावनाओं के सर्जक न बने।

(4) कम अंकों वालों को भी कम्पीटिसन परीक्षाओं में भाग लेने का अधिकार है, कोचिंग लेने का अधिकार है किंतु यह ज्यादा उचित है कि मा-बाप ऐसे बच्चों को अपने घर पर ट्यूशन दिलवाएं। उस से बच्चा कोचिंग संस्थानों के अनावश्यक तनावों से बचेगा, पेरेंट्स के सम्पर्क व गाईडेन्स में रहेगा जिस से उसका हौसला बढाता रहें गया, कठिनाइयों को ट्यूटर से मिलकर ज्यादा अच्छे से हल कर सकेंगे।

(5) नीट, कोचिंग संस्थानों में हर कालांश (पीरियड) के प्रारम्भ में कबीर वाणी, गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी-भक्ति काल के दूसरे भक्त शिरोमणियों की वाणी, बाबा फरीद की वाणी, उपनिषदों के प्रेरक संवाद, दूसरे धर्मों से प्रेरक प्रसंग-संवाद आदि 5 मिनट तक अनिवार्यत: सुना कर ही क्लासेज शुरू हो--इस से विद्यार्थी, केवल कोचिंग-डॉक्टर-इंजीनियर के अतिरिक्त वृहद रूप में जीवन को समझेगें, तनाव कम होगा----

(6) बोर्ड एफिलिएटेड स्कूल्स व कोचिंग संस्थानों का नापाक गठजोड़ समाप्त किया जाए। बहुत सी कोचिंग संस्थाएं बहुत सी बड़ी स्कूलों के साथ उन स्कूलों में ही 9वी, 10वी, 11वी, 12वी के विद्यार्थियों को कोचिंग के लिए तैयार करने लग जाते है। 9वी,10वी में ही 12वी का बहुत सारा कोर्स करवा दिया जाता है--इस से नीट- परीक्षाओं के विषयों के अतिरिक्त, बोर्ड की परीक्षाएं के, अन्य विषय पूर्णत: गौण हो जाते है।

(7) केंद्र व राज्य सरकारों, बैंकों, आर्मर्ड फोर्सेज, अर्ध सैनिक बलों की नौकरियों के लिए भी कोचिंग होती है किंतु वहां आत्महत्याओं जैसी घटना कोई अपवाद स्वरूप ही सुनी होगी। क्यों? क्योंकि उस समय तक परीक्षा देने वाले 20, 25 या अधिक आयु वर्ग से जाते है। उन्होंने जीवन के उतार-चढ़ाव, सफलता-असफलता-कठिनाइयों को नजदीक से देख लिया होता है और वे इन सब बातों को आसानी से फेस कर लेते है। नीट आदि के असपिरेन्ट्स का ऐसा कोई अनुभव नहीं होता। कई बार असफलता या कठिनाइयां उनके लिए असहनीय हो जाती हैं।

(8) हर नीट- आदि के कोचिंग संस्थानों, में सप्ताह में एक 30-45 मिन्ट का पिरीयड प्रेरक कविताओं, कहानियों, अन्य प्रेरक प्रसंगों, अच्छे कलाकारों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों की कृतियों, जीवनियों से विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए रखा जाना अनिवार्य होना चाहिए।

(9) नीट- आदि की तैयारी करनी वाली हर संस्थान में जहां 200/300/400 से अधिक संख्या के कोचिंग लेने वाले हो, वहां निश्चितत: एक रिक्रियसन रूम होना चाहिए, जिसमें साधारण इनडोर खेल जैसे कैरम, चेस, लूडो, बेडमिंटन, टेबल टेनिस आदि खेलने की सुविधाएं हों।

जिस पीजी एकोमोडेशन, हॉस्टल में 10/15/20 से अधिक बच्चे रहते हों, वहां भी इस प्रकार की रिक्रियसनल सुविधाऐ होनी चाहिए।

(10) सरकारों को छात्र-छात्रों द्वारा आत्महत्याओं से जुड़ी इस गम्भीर समस्या पर, राज्य स्तर पर या सम्भाग स्तर पर, कोचिग संस्थानों वालों, पेरेंट्स, इस से जुड़े अन्य हितार्थीयों से, 1, 2 दिन की संगोष्टी कर सुझाव लेने चाहिए। उनके आधार लीगल फ्रेमवर्क तैयार करने पर गम्भीरता से विचार किया जाए।

सर्वाधिक महत्व की तो यही बात है कि पेरेंट्स गाइड बनें किन्तु बच्चों पर अनावश्यक तनाव न डालें। बच्चे का क्या पोटेंशियल है, यह सबसे ज्यादा पेरेंट्स जानते है। पड़ोसीयों, रिश्तेदारों, जान-पहचान वालों के बच्चों की अपने बच्चों के साथ बात-बात में तुलना कर उन में हीन भावनाओं के सर्जक न बने।

अभिभावक बच्चों को नीट/ आदि से भिन्न कैरियर्स यथा शिक्षण संस्थानों में शिक्षक, वकालत-लीगल अफेर्स, आर्म्ड फोर्सेज, बैंकिंग-वितीय संस्थानों व अन्य अनेक क्षेत्रों में उपलब्ध कैरियर्स के बारे में, उनके महत्व, उपयोगिता, प्रोज-कोस के बारे में बताएं किन्तु निर्णय की स्वतंत्रता उन्हें दें।

-अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

राशिफल गुरूवार 7 सितम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, रोहिणी नक्षत्र प्रात: 10:25 तक, वज्र योग रात्रि 10:01 तक, कौलव करण सांय 4:15 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:13 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का, रोहिणी व्रत (जैन), संत ज्ञज्ञनेश्वर जयन्ती, मन्वादि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:45 तक, चर 10:52 से 12:25 तक, लाभ-अमृत 12:25 से 3:31 तक, शुभ 5:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:38

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

धनु

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मकर

व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला

व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिजनों के व्यवहार के कारण परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मानव केंद्रित वैश्वीकरण: हमें जी-20 को दुनिया के अंतिम छोर तक ले जाना है, किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना है

नरेन्द्र मोदी

'वसुधैव कुटुम्बकम'-हमारी भारतीय संस्कृति के इन दो शब्दों में एक गहरा दार्शनिक विचार समाहित है। इसका अर्थ है, पूरी दुनिया एक परिवार है। यह एक ऐसा सर्वव्यापी दृष्टिकोण है जो हमें एक सार्वभौमिक परिवार के रूप में प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक ऐसा परिवार जिसमें सीमा, भाषा और विचारधारा का कोई बंधन ना हो।

जी-20 की भारत की अध्यक्षता के दौरान, यह विचार मानव-केंद्रित प्रगति के आव्हान के रूप में प्रकट हुआ है। हम One Earth के रूप में, मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक साथ आ रहे हैं। हम One Family के रूप में विकास के लिए एक-दूसरे के सहयोगी बन रहे हैं। और One Future के लिए हम एक साझा उज्जवल भविष्य की ओर एक साथ आगे बढ़ रहे हैं।

कोरोना वैश्विक महामारी के बाद की विश्व व्यवस्था इससे पहले की दुनिया से बहुत अलग है। कई अन्य बातों के अलावा, तीन महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

पहला, इस बात का एहसास बढ़ रहा है कि दुनिया के जीडीपी-केंद्रित दृष्टिकोण से हटकर मानव-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

दूसरा, दुनिया ग्लोबल सप्लाई चेन में सुदृढ़ता और विश्वसनीयता के महत्व को पहचान रही है।

तीसरा, वैश्विक संस्थानों में सुधार के माध्यम से बहुपक्षवाद को बढ़ावा देने का सामूहिक आव्हान सामने है।

जी-20 की हमारी अध्यक्षता ने इन बदलावों में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है।

दिसंबर 2022 में जब हमने इंडोनेशिया से अध्यक्षता का भार संभाला था, तब मैंने यह लिखा था कि जी-20 को मानसिकता में आमूल-चूल परिवर्तन का वाहक बनना चाहिए।

विकासशील देशों, ग्लोबल साउथ के देशों और अफ्रीकी देशों की हाशिए पर पड़ी आकांक्षाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए इसकी विशेष आवश्यकता है।

इसी सोच के साथ भारत ने 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट' का भी आयोजन किया था। इस समिट में 125 देश भागीदार बने। यह भारत की अध्यक्षता के तहत की गई सबसे महत्वपूर्ण पहलों में से एक रही। यह ग्लोबल साउथ के देशों से उनके विचार, उनके अनुभव जानने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। इसके अलावा, हमारी अध्यक्षता के तहत न केवल अफ्रीकी देशों की अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी देखी गई है, बल्कि जी-20 के एक स्थायी सदस्य के रूप में अफ्रीकन यूनियन को शामिल करने पर भी जोर दिया गया है।

हमारी दुनिया परस्पर जुड़ी हुई है, इसका मतलब यह है कि विभिन्न क्षेत्रों में हमारी चुनौतियां भी आपस में जुड़ी हुई हैं। यह 2030 एजेंडा के मध्य काल का वर्ष है और कई लोग चिंता जता रहे हैं कि सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के मुद्दे पर प्रगति पटरी से उतर गई है।

एसडीजी के मोर्चे पर तेजी लाने से संबंधित जी-20 2023 का एक्शन प्लान भविष्य की दिशा निर्धारित करेगा। इससे एसडीजी को हासिल करने का रास्ता तैयार होगा।

भारत में, प्राचीन काल से प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर आगे बढ़ना हमारा एक आदर्श रहा है और हम आधुनिक समय में भी क्लाइमेट एक्शन में अपना योगदान दे रहे हैं।

ग्लोबल साउथ के कई देश विकास के विभिन्न चरणों में हैं और इस दौरान क्लाइमेट एक्शन का ध्यान रखा जाना चाहिए। क्लाइमेट एक्शन की आकांक्षा के साथ हमें ये भी देखना होगा कि क्लाइमेट फाइनेंस और ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलजी का भी ख्याल रखा जाए।

हमारा मानना है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए पाबंदियों वाले रवैये को बदलना चाहिए। 'क्या नहीं किया जाना चाहिए' से हटकर 'क्या किया जा सकता है' वाली सोच के साथ आगे बढ़ना होगा। हमें एक रचनात्मक कार्य संस्कृति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

एक टिकाऊ और सुदृढ़ ब्लू इकॉनमी के लिए चेन्नई एचएलपी हमारे महासागरों को स्वस्थ रखने में जुटी है।

ग्रीन हाइड्रोजन इनोवेशन सेंटर के साथ, हमारी अध्यक्षता में स्वच्छ एवं ग्रीन हाइड्रोजन से संबंधित एक ग्लोबल इकोसिस्टम तैयार होगा।

वर्ष 2015 में, हमने इंटरनेशनल सोलर अलायंस का शुभारंभ किया था। अब, ग्लोबल बायोफ्यूल्स अलायंस के माध्यम से हम दुनिया को एनर्जी ट्रांजिशन के योग्य बनाने में सहयोग करेंगे। इससे सर्कुलर इकॉनमी का फायदा ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचेगा।

क्लाइमेट एक्शन को लोकतांत्रिक स्वरूप देना, इस आंदोलन को गति प्रदान करने का सबसे अच्छा तरीका है। जिस प्रकार लोग अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर रोजमर्रा के निर्णय लेते हैं, उसी प्रकार वे इस धरती की सेहत पर होने वाले असर को ध्यान में रखकर अपनी जीवनशैली तय कर सकते हैं। जैसे योग वैश्विक जन आंदोलन बन गया है, उसी तरह हम 'लाइफस्टाइल फॉर सस्टेनेबल इनवायरमेंट' को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण, खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती होगी। इससे निपटने में मोटा अनाज या श्रीअन्न से बड़ी मदद मिल सकती है। श्रीअन्न क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर को भी बढ़ावा दे रहा है। इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स के दौरान हमने श्रीअन्न को वैश्विक स्तर पर पहुंचाया है। द डेक्कन हाई लेवल प्रिंसिपल्स ऑन फूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन से भी इस दिशा में सहायता मिल सकती है।

टेक्नॉलाजी परिवर्तनकारी है लेकिन इसे समावेशी भी बनाने की जरूरत है। अतीत में, तकनीकी प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों को समान रूप से नहीं मिला। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने दिखाया है कि कैसे टेक्नॉलजी का लाभ उठाकर असमानताओं को कम किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, दुनिया भर में अरबों लोग जिनके पास बैंकिंग सुविधा नहीं है, या जिनके पास डिजिटल पहचान नहीं है, उन्हें डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) के माध्यम से साथ लिया जा सकता है।

डीपीआई का उपयोग करके हमने जो परिणाम प्राप्त किए हैं, उन्हें पूरी दुनिया देख रही है, उसके महत्व को स्वीकार कर रही है। अब, जी-20 के माध्यम से हम विकासशील देशों को डीपीआई अपनाने, तैयार करने और उसका विस्तार करने में मदद करेंगे, ताकि वो समावेशी विकास की ताकत हासिल कर सकें।

भारत का सबसे तेज गति से बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाना कोई आकस्मिक घटना नहीं है। हमारे सरल, व्यावहारिक और सस्टेनेबल तरीकों ने कमजोर और वंचित लोगों को हमारी विकास यात्रा का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाया है। अंतरिक्ष से लेकर खेल, अर्थव्यवस्था से लेकर उद्यिमता तक, भारतीय महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। आज महिलाओं के विकास से आगे बढ़कर महिलाओं के नेतृत्व में विकास के मंत्र पर भारत आगे बढ़ रहा है। हमारी जी-20 प्रेसीडेंसी जेंडर डिजिटल डिवाइड को पाटने, लेबर फोर्स में भागीदारी के अंतर को कम करने और निर्णय लेने में महिलाओं की एक बड़ी भूमिका को सक्षम बनाने पर काम कर रही है।

भारत के लिए, जी-20 की अध्यक्षता केवल एक उच्च स्तरीय कूटनीतिक प्रयास नहीं है। मदर ऑफ डेमोक्रेसी और मॉडल ऑफ डाइवर्सिटी के रूप में हमने इस अनुभव के दरवाजे दुनिया के लिए खोल दिये हैं।

आज किसी काम को बड़े स्तर पर करने की बात आती है तो सहज ही भारत का नाम आ जाता है। जी-20 की अध्यक्षता भी इसका अपवाद नहीं है। यह भारत में एक जन आंदोलन बन गया है।

जी-20 प्रेसीडेंसी का हमारा कार्यकाल खत्म होने तक भारत के 60 शहरों में 200 से अधिक बैठकें आयोजित की जा चुकी होंगी। इस दौरान हम 125 देशों के लगभग 100,000 प्रतिनिधियों की मेजबानी कर चुके होंगे। किसी भी प्रेसीडेंसी ने कभी भी इतने विशाल और विविध भौगोलिक विस्तार को इस तरह से शामिल नहीं किया है।

भारत की डेमोग्राफी, डेमोक्रेसी, डाइवर्सिटी और डेवलपमेंट के बारे में किसी और से सुनना एक बात है और उसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना बिल्कुल अलग है। मुझे विश्वास है कि हमारे जी-20 प्रतिनिधि इसे स्वयं महसूस करेंगे।

हमारी जी-20 अध्यक्षता विभाजन को पाटने, बाधाओं को दूर करने और सहयोग को गहरा करने का प्रयास करती है। हमारी भावना एक ऐसी दुनिया के निर्माण की है, जहां एकता हर मतभेद से ऊपर हो, जहां साझा लक्ष्य अलगाव की सोच को खत्म कर दे।

जी-20 अध्यक्ष के रूप में, हमने वैश्विक पटल को बड़ा बनाने का संकल्प लिया था, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया कि हर आवाज सुनी जाए और हर देश अपना योगदान दे। मुझे विश्वास है कि हमने कार्यों और स्पष्ट परिणामों के साथ अपने संकल्प पूरे किये है।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

"नागरीदास" के नटनागर श्री राधा कृष्ण

देवी सिंह नरूका

श्रीमद्भागवत के अनुसार भगवान ने स्वयं कहा है –

"नाहं वसामि वैकुंठे, योगिनाम हृदये न च।
मद भक्ता यत्र गायंति, तत्र तिष्ठामि नारद्''॥

अर्थात हे नारद्! न तो मैं वैकुंठ में निवास करता हूं और न योगियों के हृदय में, किंतु जहां मेरे भक्त गायन करते है, मैं वहीं रहता हूं।

यही कारण है कि कृष्ण भक्त कवियों में भगवान की लीला के गुणगान की विशेष परम्परा रही है। इसी परम्परा में नागरीदास का नाम उल्लेखनीय है। अजमेर के निकट रूपनगढ़ के राजा सावंत सिंह राजपाट छोड़कर वृंदावन जाकर रहने लगे और वहां पर 'नागरीदास' उपनाम से नटनागर की लीला का गुणगान करते हएु अनेक पदों की रचना की। इसलिए कहा जाता है 'अष्ठछाप पहले भये नवें नागरीदास'। अपने 64 वर्ष के जीवनकाल में नागरीदासजी ने छोटे-बड़े 75 ग्रन्थों की रचना की।

डॉ. किशोरीलाल गुप्त के अनुसार नागरीदास जी (सन् 1700-1764 ई.) का पहला ग्रन्थ 'मनोरथ मंजरी' है। इसमें भक्तवर ने बृज भूमि में रहने की उत्कट अभिलाषा व्यक्त की है।

"मौ नैनन की ठोर को, कबले है वह रूप,
तीन ताप सीतल करन, सधन तरून की धुंध।
कब वृंदावन धरण में, चरण परेंगे जाय,
लोटि धूरि धरि सीस पर, कछु मुखहूं से पाय॥''

नागरीदास ने सदैव नटनागर और नागरी राधा की लीला का गुणगान किया। उन्होने कभी सांसारिक सुख-सम्पत्ति की कामना नहीं की।

"नागर निहोरि कर जोरि, मांगो तिनपे तें।
देहूं प्रेम भक्ति को छुडाय, विषे वासना॥''

ऐसी ही भक्ति से सरोबार 'नागरीदास' के पूर्व राग का वर्णन देखिये :-

"हूं हरि हेरनि मांझ ठनी,
सोही मद अलसोंही आंखियां, हिय में आन खगी।
नहिं कछु गृह काज बनत, जिय चितवन रहत लगी,
'नागरिया' मोहन मिलिबे, को चिंता ज्वाल जगी॥''

श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर हर्षोल्लास प्रकट करते हुये नागरीदास लिखते है :-

"नंद गोपराज सुन, और बृज ओप आज,
तेरे पुत्र, भयो पुण्य फल जायको।
ब्रहम ऋषिद्वार, बहो देवता विमाननि पें,
छायो सुर वेद गान, भेद के अलाप को।
घर घर संपदा अपार बढ़ी देखियत।
हमपे न कीनो जान, बर्नन प्रताप को।
'नागर' यों बैर बैर ग्वाल कहे टेर टेर।
तेरो घर मानों, परमेसुर के बाप को॥''

सखाओं सहित नटनागर ने दधि माखन खूब खाया किंतु ऐसे ही नंद किशोर ने जब बृजभूमि पर विपदा आई तब गोवर्धन पर्वत उठाकर उस क्षेत्र की रक्षा की। श्री कृष्ण के इस महान कार्य से गोप गोपियों का आत्म सम्मान बढ़ा और ऐसा लगा कि दधि माखन खिलाना सफल हो गया –

"गोवर्धन धारी नाम कुंवर को, जब ही तें हम लींन्हो,
सात दिवस गिरीवर कर राख्यो, इन्द्रमान भन कीनों।
भले खायो चोरि दधि बृज में, भले दान दधि छीनों।
'नागरिया' घर घर को माखन आजु सफल करि दीनो''॥

कृष्ण लीला का रसास्वादन कीजिये, किस प्रकार से नवल किशोर हंसी-ठिठोली में ही गापे बालाओं का मन हरण कर गोपी वल्लभ बन गये –

"गई हुती बेचन गोरस के,
रोकि आनि दान मिस मोहन,
बांकि चितवनि मेरे हिय माझ कसके।
अंचरा गहि, फिर बहियां गहीरी।
कर मेरा मसक्यो, अबलो चसके।
'नागरीदास' कठिन मोहि बीतत।
उहिं तो मन लीनों हंसि हंसि के''।

भ्रमर गीतों में संत कवि सूर ने गोपियों की विरह वेदना का वर्णन किया है। नागरीदास की गोपियों के प्रेम की उत्कृष्टता का भी रसास्वादन कीजिये। वे कहती है कि हमारे शरीर के चाहे टुकडे-टुकडे कर दीजिये किंतु जब नंद किशोर आयेंगे स्वत: ही उनमें प्राणों का संचार होगा और उठकर उनसे लिपट जायेंगे।

"उधो बृथा करत बकवाद।
हम जान्यो तुम जानत, नाही रूप सुधा सुख स्वाद।
सकल ब्रज मोहन मई है, गोप गोपी गाय,
तिनतो बिन धनश्याम सुंदर, कैसे और सुहाय,
हमरे तन कर खडं खंड ज्यों देही भूमि में डारि।
न्यारे न्यारे लपटि जाहि लखि नागर नंद कुंवार''॥

विश्व प्रसिद्ध किशनगढ़ चित्रशैली का विकास नागरीदासजी के समय में ही हुआ उनके द्वारा रचित पदों के आधार पर अनेक कलाकारों ने चित्र बनाये है। भादव माह की अंधेरी रात में किस पक्रार से कुंज बिहारी नागरी राधा के रूप दर्शन का लाभ प्राप्त करते हैं। कवि की कल्पना का रसास्वादन कीजिये –

"भादों की कारी अंध्यारी निशा,
झुकि बादर मंद फुंहि बरसावे।
ता समै नागर के दृग दूरितें,
आतुर रूप की भीख यों पावें।
पोन मया करि घूंघट टारे।
दया करि दामिनि दीप दिखावे''॥

–देवी सिंह नरूका,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

भगवान कृष्ण की उपासना के पर्व जन्माष्टमी को सार्थक करने के वास्ते उनके उपदेशों को आत्मसात करें

डॉ. जे.के. गर्ग

भगवान कृष्ण की उपासना के पर्व जन्माष्टमी पर हमारी पूजा-अर्चना तभी सार्थक होगी जब हम भगवान के उपदेशों को आत्मसात करने का संकल्प लें और उनके बताये रास्ते पर चलें। कृष्णमय हो कर उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें! सनातन धर्म के अनुयायीयों के मतानुसार जब-जब इस धरा पर राक्षसों और क्रूर शासकों के जुल्म और अत्याचार चरम सीमा तक बढ़ जाते हैं और जब सत्य पर असत्य, विनम्रता पर अहंकार, नैतिकता पर अनैतिकता, सहिष्णुता पर असहिष्णुता, न्याय पर अन्याय और धर्म पर अधर्म हावी हो जाता है, तब जगत के पालनहार भगवान विष्णु खुद सत्य और धर्म की पुन: स्थापना करने हेतु पृथ्वी पर अवतरित होते है। इसी कड़ी में भारत की पावन भूमि पर स्वयं भगवान विष्णु अपनी सोलह कलाओं के साथ आठवें अवतार के रूप में भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी की मध्यरात्रि को रोहिणी नक्षत्र में कृष्ण के रूप में अवतरित हुए थे।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता के माध्यम से मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों सरल भाषा में समझाते हुवे निष्काम भाव से सात्विक कर्म करके उन्हें परमात्मा को समर्पित करने कहा था। कृष्ण ने केवल उपदेश ही नहीं दिए, उन्होंने उनको साकार कर भी दिखाया। जैसे गीता के रूप में उनकी वाणी अनुकरणीय है वैसे ही उनका जीवन भी। भगवान ने बताया कि रिश्ते कैसे निभाये जाते है, अपने जीवन को कैसे प्रेममय बनाया जाता है और जीवन के उतार-चड़ाव का सामना मुस्कराते हुये कैसे किया जाता है। भगवान कृष्ण ने हमको समझाया कि हम क्यों व्यर्थ की चिंता करते हैं? आत्मा अविनाशी और अमर है। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप ना करो, भविष्य की चिंता ना करो। ध्यानपूर्वक सुनो– तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाए थे, जो तुमने खो दिया? तुम क्या लाये हो जो नष्ट हो गया है? ना तुम कुछ लेकर आए, जो लिया यहीं से लिया। जो दिया, यही पर दिया। जो लिया, भगवान से लिया। जो दिया भगवान को दिया। इंसान खाली हाथ आया और खाली हाथ जायगा। जो आज तुम्हारा है, कल किसी का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मगन हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दु:खों का मूल कारण है। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो कुछ भी तुम करते हो, उसे भगवान को अर्पण कर दो। ऐसा करने से तुमको सदा आनंद का अनुभव होगा।

इस जन्माष्टमी भगवान की उपासना करते हुये उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन मे उतारे। कर्तव्य परायणता की यही शिक्षा श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र की रणभूमि में गीता के माध्यम से अर्जुन को दी थी, जो युद्ध भूमि में अपने स्वजनों की संभावित मृत्यु के भय से दु:खी होकर अपने क्षत्रिय धर्म एवं कर्तव्य से मुहँ मोड़ कर युद्ध नहीं करना चाह रहें थे। भगवान ने बतलाया कि एक क्षण में तुम करोडो के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा हैं, तुम सब के हो। यह शरीर अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसमें ही में मिल जाएगा। परन्तु आत्मा स्थिर हैं अविनाशी है तुम नाशवान शरीर नहीं तुम तो अविनाशी आत्मा हो तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। नि:संदेह गोवर्धन कान्हा के सम्पूर्ण जीवन काल में कर्म की ही प्रधानता रही थी। भगवान कृष्ण ने हमें बताया कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म भी निश्चित है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को असत्य, विनम्रता पर अहंकार, नैतिकता पर अनैतिकता, सहिष्णुता पर असहिष्णुता, न्याय पर अन्याय और भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता के माध्यम से मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों सरल भाषा में समझाते हुवे निष्काम भाव से सात्विक कर्म करके उन्हें परमात्मा को समर्पित करने को कहा था। कृष्ण ने केवल उपदेश ही नहीं दिए, उन्होंने उनको साकार भी कर दिखाया। जैसे गीता के रूप में उनकी वाणी अनुकरणीय है वेसे ही उनका जीवन भी।

मनुष्य जो चाहे बन सकता है, अगर वह विश्वास के साथ इच्छित वस्तु पर लगातार चिंतन करें तो। जो मनुष्य अपने-अपने कर्तव्य का पालन करता है, वह असली योगी है। जो पुरुष न तो कर्मफल की इच्छा करता है, और न कर्मों से घृणा करता है, वह मनुष्य ही वास्तव के अंदर संन्यासी है। जीवन न तो भविष्य में है ना अंत में। हे अर्जुन! परमेश्वर प्रत्येक जीव के हृदय में स्थित है। भगवद गीता के अनुसार नरक के तीन द्वार होते है– वासना, क्रोध और लालच। मनुष्य को इन तीनों से बचना चाहिए। कर्म काण्ड पूजा-अर्चना का अपना महत्व है।

– डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कॉलेज शिक्षा जयपुर